Journal of Advances and Scholarly Researches in Allied Education
Vol. 20, Issue No. 1, January-2023, ISSN 2230-7540

महात्मा गांधी के राजनितिक गतिविधियों में कृषि एवं किसानों की दुर्गति

Geeta[1]*, Dr. Priyanka Guru[2]

[1] Research Scholar, Madhyanchal Professional University, Bhopal

[2] Professor, Department of Political Science, Madhyanchal Professional University, Bhopal

सार - भारत के इतिहास में एक श्रद्धेय व्यक्ति, महात्मा गांधी को अक्सर भारत की स्वतंत्रता के लिए उनके अहिंसक संघर्ष के लिए पहचाना जाता है। यह अध्ययन गांधी की राजनीतिक गतिविधियों के कम-अन्वेषित पहलू पर प्रकाश डालता है, जो कृषि से संबंधित मुद्दों और किसानों की दुर्दशा के साथ उनके जुड़ाव पर केंद्रित है। शोध में यह विश्लेषण करने का प्रयास किया गया है कि भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन के दौरान गांधी की विचारधाराओं, कार्यों और रणनीतियों ने कृषि क्षेत्र और किसानों की सामाजिक-आर्थिक स्थितियों को कैसे प्रभावित किया। यह शोध अहिंसक विरोध प्रदर्शनों, मार्चों और वकालत अभियानों के माध्यम से इन मुद्दों को संबोधित करने के गांधीजी के प्रयासों पर प्रकाश डालता है। यह किसानों की आवाज को बढ़ाने, उनका समर्थन जुटाने और उनकी चिंताओं को स्वतंत्रता के संघर्ष में सबसे आगे लाने में उनकी भूमिका पर प्रकाश डालता है। हालाँकि, अध्ययन गांधी के दृष्टिकोण की सीमाओं और जटिलताओं के साथ-साथ व्यापक सामाजिक-राजनीतिक संदर्भ का भी मूल्यांकन करता है जिसने उनके प्रयासों के परिणामों को प्रभावित किया। एक महत्वपूर्ण विश्लेषण के माध्यम से, इस शोध का उद्देश्य कृषि क्षेत्र और किसानों की भलाई पर गांधी की पहल के प्रभाव के बारे में जानकारी प्रदान करना है। यह उनके कार्यों की सफलताओं, चुनौतियों और अनपेक्षित परिणामों की जांच करता है, जो कृषि संबंधी मुद्दों के संबंध में उनकी विरासत की अधिक सूक्ष्म समझ में योगदान देता है। इस अध्ययन के निष्कर्षों का भारत में समकालीन कृषि और ग्रामीण विकास नीतियों पर प्रभाव पड़ता है। ऐतिहासिक मिसालों की जांच करके, अनुसंधान मूल्यवान सबक प्रदान करता है जो किसानों के सामने आने वाली मौजूदा चुनौतियों, जैसे भूमि विवाद, बाजार पहुंच और सामाजिक-आर्थिक असमानताओं से निपटने के लिए रणनीतियों को सूचित कर सकता है। निष्कर्षतः, यह अध्ययन कृषि और किसानों के साथ महात्मा गांधी के राजनीतिक जुड़ाव के व्यापक मूल्यांकन में योगदान देता है। ऐतिहासिक संदर्भ में उनके प्रयासों का विश्लेषण करके, यह शोध स्वतंत्रता आंदोलन के दौरान कृषि संबंधी मुद्दों से जुड़ी जटिलताओं की गहरी समझ प्रदान करता है। यह सूक्ष्म परिप्रेक्ष्य ग्रामीण समुदायों और कृषि क्षेत्र की नियति को आकार देने में राजनीतिक नेताओं की भूमिका पर चल रही चर्चा में योगदान देता है।

कीवर्ड - विरोध, कृषि, राजनीतिक, किसान, सामाजिक-आर्थिक

---X---

महात्मा गांधीः प्रारंभिक जीवन

मोहन दास करमचंद गांधी का जन्म गुजरात के एक सम्मानित परिवार में पोरबंदर अथवा सुदामापुरी में 2 अक्टूबर 1869 ई. में हुआ था। पिता करमचंद गांधी (कबा गांधी) पहले पोरबंदर फिर राजकोट और बीकानेर में दीवान पद पर रहें। पिता की ईमानदारी और माता की धर्मपरायणता व पवित्रता का प्रभाव बालक मोहनदास पर भी पड़ा। गांधी जी ने बचपन में हरिषचन्द्र नाटक देखा कि किस प्रकार राजा हरिषचंद्र को अनेक कठिनाईया भी सत्यपथ से डिगा न सकी। सत्य की विजय का ऐसा प्रभाव पड़ा कि उन्हें सपनो में भी राजा हरिषचंद्र दिखाई देते थे। राजा की दृढता ने उन्हे विश्वास दिलाया कि विपत्तियों को सहना और सत्य का पालन करना ही वास्तविक सत्य हैं। गांधी जी ने संकल्प लिया कि वे जीवन पर्यन्त सत्य के मार्ग पर ही चलेंगे। गांधी जी को पाठ्य पुस्तकों को छोड़कर कुछ और पढ़नें का शौक नहीं

www.ignited.in

था, परंतु एक बार पिता द्वारा लाई हुई श्रवण-पितृभक्ति नाटक की किताब पढकर उनके मन में न केवल माता-पिता वरन् सभी बड़ो के प्रति श्रद्धा और सेवा का भाव जागृत किया

गांधी जी का विवाह 13 वर्ष की आयु में कस्तुरबा से पोरबन्दर में हुआ। एक बार एक पुस्तक में एक पत्नी व्रत धर्म के बारे में पढ़कर वे अपनी पत्नी से एक पतिव्रत का पालन करवाने के लिए आतुर हुए। इन्हीं कारणों से उनके और कस्तुरबा के मध्य मनमुटाव हो गए। विवाह के बाद भी पढ़ाइ जारी रखी कुसंगति में फॅस कर गांधी जी में बीड़ी पीने और मांसाहार करने जैसी बुरी आदत पड़ गई। इसकी पूर्ति के लिए चोरी भी करने लगे। इसके साथ ही एक बार उनके ऊपर दुकानदार का 25 रू. का ऋण हो गया। उसे चुकाने के लिए गांधी जी और उनके बडे भाई ने बडे भाई के हाथों में पहना हुआ सोने का कड़ा बेचकर कर्ज चुकाया। कर्ज पटने पर जब उन्हें पष्चाताप हुआ तो उन्होने पत्र लिखकर पिता के समक्ष दोष स्वीकार किया और प्रतिज्ञा की कि भविष्य में ऐसी गलती नहीं करेंगे। पत्र पढ़कर पिता की आंखे हर्ष के आँसुओं से भर गई और उन्होने पुत्र को तुरंत क्षमा कर दिया। इससे गांधी जी को षिक्षा मिली की पष्चाताप का सर्वोत्तम उपाय शुद्ध ह्रदय से दोष को स्वीकारना हैं।

भारत में राष्ट्रवाद

जैसा कि आप देख चुवेफ हैं, यूरोप में आधुनिक राष्ट्रवाद वेफ साथ ही राष्ट्र-राज्यों का भी उदय हुआ। इससे अपने बारे में लोगों की समझ बदलने लगी। वे कौन हैं, उनकी पहचान किस बात से परिभाषित होती है, यह भावना बदल गई। उनमें राष्ट्र के प्रति लगाव का भाव पैदा होने लगा। नए प्रतीकों ने, नए गीतों और विचारों ने नए संपर्वफ स्थापित किए और समुदायों की सीमाओं को दोबारा परिभाषित कर दिया। यादातर देशों में इस नयी राष्ट्रीय पहचान का निर्माण एक लंबी प्रक्रिया में हुआ। आइए देखें कि हमारे देश में यह चेतना किस तरह पैदा हुई?

दूसरे उपनिवेशों की तरह भारत में भी आधुनिक राष्ट्रवाद वेफ उदय की परिघटना उपनिवेशवाद विरोधी आंदोलन वेफ साथ गहरे तौर पर जुड़ी हुई थी। औपनिवेशिक शासकों वेफ ख़िलापफ संघर्ष के दौरान लोग आपसी एकता को पहचानने लगे थे। उत्पीड़न और दमन वेफ साझा भाव ने विभिन्न समूहों को एक-दूसरे से बाँध दिया था। लेकिन हर वर्ग और समूह पर उपनिवेशवाद का असर एक जैसा नहीं था। उनवेफ अनुभव भी अलग थे और स्वतंत्राता के मायने भी भिन्न थे। महात्मा गांधी वेफ नेतृत्व में कांग्रेस ने इन समूहों को इकट्ठा करवेफ एक विशाल आंदोलन खड़ा किया। परंतु इस एकता में टकराव वेफ बदु भी निहित थे।

पहले की एक और पुस्तक में भी आपने भारत में राष्ट्रवाद वेफ उदय का अध्ययन किया था। वहाँ आपने बीसवीं सदी वेफ पहले दशक तक की कहानी पढी थी। इस अध्याय में हम 1920 वेफ दशक से आगे अध्ययन करेंगे और असहयोग आंदोलन तथा सविनय अवज्ञा आंदोलन वेफ बारे में पढेगे। हम ये देखेंगे कि कांग्रेस ने राष्ट्रीय आंदोलन को विकसित करने वेफ लिए किस तरह वेफ प्रयास किए, इस आंदोलन में विभिन्न सामाजिक समूहों ने किस तरह हिस्सा लिया और किस तरह राष्ट्रवाद ने लोगों की कल्पना को नयी उड़ान दे दी।

पहला विश्वयुद्ध, ख़िलाफत और असहयोग

1919 से बाद वेफ सालों में हम देखते हैं कि राष्ट्रीय आंदोलन नए इलावफों तक पैफल गया था, उसमें नए सामाजिक समूह शामिल हो गए थे और संघर्ष की नयी पद्धतियाँ सामने आ रही थीं। इन बदलावों को हम वैफसे समझेंगे? उनवेफ क्या परिणाम हुए?

सबसे पहली बात यह है कि विश्वयुद्ध ने एक नयी आ£थक और राजनीतिक स्थिति पैदा कर दी थी। इसवेफ कारण रक्षा व्यय में भारी इज़ाफा हुआ। इस खर्चे की भरपाई करने वेफ लिए युद्ध वेफ नाम पर वर्फो लिए गए और करों में वृद्धि की गई। सीमा शुल्क बढा दिया गया और आयकर शुरू किया गया। युद्ध वेफ दौरान वफीमतें तेशी से बढ रही थीं। 1913 से 1918 वेफ बीच फीमतें दोगुना हो चुकी थीं जिसवेफ कारण आम लोगों की मुश्किलें बढ गई थीं। गाँवों में सिपाहियों को जबरन भर्ती किया गया जिसवेफ कारण ग्रामीण इलावफों में व्यापक गुस्सा था। 1918-19 और 1920-21 में देश वेफ बहुत सारे हिस्सों में पफसल खराब हो गई जिसवेफ कारण खाद्य पदार्थों का भारी अभाव पैदा हो गया। उसी समय फ्ऱलू की महामारी पैफल गई। 1921 की जनगणना वेफ मुताबिक दुभक्ष और महामारी वेफ कारण 120-130 लाख लोग मारे गए।

लोगों को उम्मीद थी कि युद्ध खत्म होने वेफ बाद उनकी मुसीबतें कम हो जाएँगी। लेकिन ऐसा नहीं हुआ। इसी समय एक नया नेता सामने आया और उसने संघर्ष का एक नया ढग, एक नया तरीफा पेश किया।

www.ignited.in

सत्याग्रह का विचार

महात्मा गांधी जनवरी 1915 में भारत लौटे। इससे पहले वे दक्षिण अफ्रिका में थे। उन्होंने एक नए तरह वेफ जनांदोलन वेफ रास्ते पर चलते हुए वहाँ की नस्लभेदी सरकार से सपफलतापूर्वक लोहा लिया था। इस पद्धति को वे सत्याग्रह कहते थे। सत्याग्रह वेफ विचार में सत्य की शक्ति पर आग्रह और सत्य की खोज पर जोर दिया जाता था। इसका अर्थ यह था कि अगर आपका उद्देश्य सच्चा है, यदि आपका संघर्ष अन्याय वेफ ख़िलाफ है तो उत्पीड़क से मुफ़ाबला करने वेफ लिए आपको किसी शारीरिक बल की आवश्यकता नहीं है। प्रतिशोध की भावना या आक्रामकता का सहारा लिए बिना सत्याग्रही वेफवल अहिसा वेफ सहारे भी अपने संघर्ष में सपफल हो सकता है। इसवेफ लिए दमनकारी शत्रु की चेतना को झिझोड़ना चाहिए। उत्पीड़क शत्रु को ही नहीं बल्कि सभी लोगों को हिसा वेफ जरिए सत्य को स्वीकार करने पर विवश करने की बजाय सच्चाई को देखने और सहज भाव से स्वीकार करने वेफ लिए प्रेरित किया जाना चाहिए। इस संघर्ष में अंततः सत्य की ही जीत होती है। गांधीजी का विश्वास था की अहिसा का यह धर्म सभी भारतीयों को एकता वेफ सूत्रा में बाँध सकता है

भारत आने वेफ बाद गांधीजी ने कई स्थानों पर सत्याग्रह आंदोलन चलाया। 1917 में उन्होंने बिहार वेफ चंपारन इलालोफ का दौरा किया और दमनकारी बागान व्यवस्था वेफ ख़िलाप़फ किसानों को संघर्ष वेफ लिए प्रेरित किया। 1917 में उन्होंने गुजरात वेफ खेड़ा जिले वेफ किसानों की मदद वेफ लिए सत्याग्रह का आयोजन किया। फसल खराब हो जाने और प्लेग की महामारी वेफ कारण खेड़ा जिले वेफ किसान लगान चुकाने की हालत में नहीं थे। वे चाहते थे कि लगान वसूली में ढील दी जाए। 1918 में गांधीजी सूती कपड़ा कारखानों वेफ मजदूरों के बीच सत्याग्रह आंदोलन चलाने अहमदाबाद जा पहुँचे।

ब्रिटिश आर्थिक नीति का भारतीय अर्थव्यवस्था पर प्रभाव

भारत में अंग्रेजो ने अपने हितों को ध्यान में रखकर और उन्हें बढ़ाने के लिए कंपनी तथा ब्रिटेन की सरकार ने अपनी नई आर्थिक नीतियों का प्रतिपादन किया और समयानुकूल उन्हें लागू किया। उन्होंने जो आर्थिक-नीतियां यहां लागू की उसके चलते भू-राजस्व प्रणाली, कृषि, उद्योग और व्यापार के क्षेत्रों में अनेक परिवर्तन हुए। इन परिवर्तनों के परिणामस्वरूप भारतीय जनजीवन पर बडे ही महत्वपूर्ण प्रभाव पड़ें। निःसंदेह इनमे से कुछ अच्छे भी थे किन्तु स्वार्थ से प्रेरित होने के कारण सामान्यतः ये अहितकर ही साबित हुए।

नई भूमि राजस्व व्यवस्था:

अंग्रेज शासकों ने जानबूझ कर एक निष्चित कर प्रणाली का निर्माण नहीं किया था। सैकड़ो वर्षो से तरह-तरह से परीक्षण करके, हर प्रदेश के ग्रामीण वर्गो के समावेष और कृषि की उन्नति पर विचार करके सबसे ज्यादा भू-राजस्व कैसे वसूल किया जाए इसी इरादे से अंग्रेज शासक वर्ग ने अनेक तरह की भूमि व्यवस्थाओं को लागू किया था। प्राचीन काल से ही भारतीय शासक किसानों से उसकी उपज का एक निश्चित अंश भू-राजस्व के रूप में लेते आ रहे थे। राजस्व वसूली वे या तो प्रत्यक्ष रूप से अपने कर्मचारियों के माध्यम से अथवा जमींदार या दूसरे बिचैलियों के माध्यम से करते थे।

कंपनी सरकार ने भू-राजस्व व्यवस्था में कई महत्वपूर्ण परिवर्तन किए। बक्सर के युद्ध (1764) के बाद कंपनी को पहली बार बंगाल, बिहार तथा उड़ीसा के क्षेत्रों में राजस्व वसूली का अधिकार मिल गया। कालान्तर में भारत में ब्रिटिश क्षेत्रों के विस्तार के साथ ही राजस्व की वसूली में भी बढ़ोत्तरी होती गयी। 1773 मे कंपनी ने स्वयं राजस्व वसूली का निर्णय लिया। वारेन हेंस्टिंग्स ने बंगाल, बिहार, उड़ीसा में राजस्व वसूली के अधिकार की नीलामी स्वीकार की जो व्यक्ति सबसे ऊंची बोली लगाता उसे एक निश्चित क्षेत्र से राजस्व वसूल करने का अधिकार दे दिया जाता था। परंतु यह व्यवस्था किसी भी दृष्टि से लाभप्रद नहीं थी।

कृषि एवं किसानों की दुर्गति:-

भारत में अंग्रेजों की शोषण की नीति के कारण खेती में घोर संकट उत्पन्न हो गया। खेती पर आबादी के बढ़ते हुए दबाव से उत्पन्न समस्या का समाधान नहीं किया गया। ब्रिटिश साम्राज्यवाद के आने से पहले भारत के उद्योग धंधों और खेती में एक प्रकार का संतुलन था। अंग्रेजों की नीति ने इस संतुलन को एकदम नष्ट कर दिया। और भारत एक विशद्ध खेतीहर देश बन गया।

बड़े पैमाने पर किसानों के खेत उनके हाथों से निकल गए। अतः किसानों पर बोझ बढ़ता गया। उनकी बदतर स्थिति का सबसे महत्वपूर्ण कारण जमींदारों

www.ignited.in

तथा राजस्व अधिकारियों द्वारा समय-समय पर लगान की दर में वृद्धि और तरह-तरह से किसानों का शोषण था। इस प्रकार किसानों को विवश होकर महाजनों के शरण में जाना पड़ा। महाजन उन्हें ऊँची ब्याज दर पर कर्जा देते थे। कर्जा नहीं चुकाने पर किसानों को अपनी जमींन से हाथ धोना पड़ता था।

रैयतवाड़ी और महालवारी क्षेत्रों में किसान धीरे-धीरे कर्ज के सागर में डूबते गये और किसानों की ज्यादा से ज्यादा जमींन पर महाजनों, व्यापारियों, धनी काश्तकारों तथा दूसरे संपन्न वर्गों का कब्जा होता गया। यही हाल जमींदारी व्यवस्था वाले क्षेत्रों के किसानों का भी था।

कृषि का वाणिज्यीकरणः-

ब्रिटिश सरकार द्वारा सूती वस्त्र के व्यापार से तो अत्यधिक लाभ कमाया ही जा रहा था। साथ ही भारत में कृषि का वाणिज्यीकरण कर अधिक लाभ कमाने का प्रयास किया गया। इस हेतु भारत में कृषकों को अग्रिम राशि अदायगी की गई। यह रकम उन्हें या तो ब्रिटिश पूंजीपतियों अथवा स्थानीय महाजनों से ऋण के रूप में मिलती थी। सरकार द्वारा इसमें अपने लाभ के लिए नगद फसलों के उत्पादन व ब्रिकी पर नियंत्रण स्थापित किया गया। किसानों को अफीम बोने हेतु ब्याज मुक्त ऋण की अदायगी की गई।

नगदी फसलों का अधिक उत्पादन किए जाने से खाद्यान्न के उत्पादन में कमी आ गयी। खाद्यानों के उत्पादन में कमी आने का एक कारण यह भी था कि कपास, जूट, कचा रेशम (मलबरी), गन्ना, कल्मी शोरा,काली मिर्च, कॉफी और तिलहन जैसी नकदी या व्यावसायिक फसलों के उत्पादन को तो प्रोत्साहन किया।

मगर खाद्यानों की कमी की ओर ध्यान नहीं दिया। इससे भारतीय किसानों का एक वर्ग तो कुछ समय के लिए अवश्य समृद्ध हो गया, परंतु खाद्यानों का उत्पादन घट गया। देश के कुछ भागों में किसान के अंग्रेज बगान-मालिकों ने नील की खेती करने के लिए और उन्हीं के द्वारा तय की गई कीमत पर उन्हें बेचने के लिए मजबूर किया।

कृषि के बढ़ते हुए व्यावसायिकरण ने महाजनों तथा व्यापारियों द्वारा किसानों के शोषण को और अधिक बढ़ाया। गरीब किसान कटाई के बाद जल्दी अपनी फसलों को बेचने को मजबूर हो जाता था। उसे सरकार, जमींदारों तथा महाजनों की मांगों को पूरा करना पड़ता था, अतः वह अपनी फसलों की जो कुछ कीमत मिलती थी उसी कीमत पर बेच देता था। वस्तुतः इस कारण से वह अन्न के व्यापारियों की दया पर आश्रित रहता था। इस नीति के कारण ग्रामीण अर्थनीति में गंभीर परिवर्तन परिलक्षित हुये। कारखानों हेतु रूई का उत्पादन किया जाता जिसमें अन्य अनाजों की तुलना में अधिक खाद व सिंचाई की आवश्यकता होती थी अर्थात् अधिक विनियोग करना पड़ता था। इसका सीधा तात्पर्य था कि किसान को इस हेतु धन की आवष्यकता हाती, जिसे वह गावं के बनिया या महाजन से लेता था। अपने खाद्य पदार्थो के लिए भी वह ऋण पर निर्भर हो जाता था।

ऐसें ऋणों पर बनिया, महाजन अधिक ब्याल वसूलते थे। रूई की मांग मैनचेस्टर में थी परंतु उस बाजार तक माल पहुॅचाना किसान के वश का नहीं था अतः वह महाजन या रूई के बिचैलियों के द्वारा ही रूई का विक्रय करता था। जबकि इसके पूर्व वह सीधे जुलाहों को बेचा करता था और बीच में कोई बिचैलिया नहीं होता था।

इस प्रकार कृषि के वाणिज्यीकरण के फलस्वरूप भारतीय किसानों की गरीबी बढ़ती गयी। वह सरकार, जमींदार, बिचैलियों, व्यापारियों, बनियों तथा महाजनों के हाथों पिसता रहा। इन सबकी मांगों को पूरी करने के बाद उसके पास खुद के लिए बहुत कम बच पाता था।

गांधी का दर्शन आदर्शवाद, प्रकृतिवाद और व्यवहारवाद

महात्मा गांधी, जिन्हें मोहनदास करमचंद गांधी के नाम से भी जाना जाता है, एक भारतीय स्वतंत्रता कार्यकर्ता थे, जिन्हें व्यापक रूप से 20वीं शताब्दी के सबसे प्रभावशाली व्यक्तियों में से एक माना जाता है। वह अपने दर्शन के लिए जाने जाते हैं, जो आदर्शवाद, प्रकृतिवाद और व्यावहारिकता का मिश्रण है। यहाँ इस दर्शन पर कुछ नोट्स दिए गए हैं और यह वास्तविक जीवन स्थितियों पर कैसे लागू होता हैः

आदर्शवाद (Idealism): गांधी जी का मानना था कि मनुष्य में परिपूर्ण होने की क्षमता है और अगर लोग इस आदर्श की दिशा में काम करते हैं तो दुनिया एक बेहतर

www.ignited.in

जगह बन सकती है। उन्होंने सत्य, अहिंसा और करुणा जैसे नैतिक मूल्यों के महत्व पर जोर दिया।

उदाहरणः सविनय अवज्ञा के गांधी के सबसे प्रसिद्ध कृत्यों में से एक नमक मार्च था, जिसमें उन्होंने और उनके अनुयायियों ने ब्रिटिश नमक करों का विरोध करने के लिए 240 मील की दूरी तय की। यह अधिनियम उनके आदर्शवादी विश्वास पर आधारित था कि लोगों को अपने स्वयं के नमक का उत्पादन करने का अधिकार होना चाहिए और अन्यायपूर्ण करों के अधीन नहीं होना चाहिए।

प्रकृतिवाद (Naturalism): गांधी जी भी प्रकृति के महत्व और इसके साथ सद्भाव में रहने में विश्वास करते थे। उनका मानना था कि मनुष्य प्रकृति से अलग नहीं बल्कि उसका एक हिस्सा है और प्रकृति का शोषण एक प्रकार की हिंसा है।

उदाहरणः गांधी जी स्थायी जीवन के हिमायती थे और सादा जीवन के महत्व में विश्वास करते थे। उन्होंने प्राकृतिक संसाधनों के उपयोग को बढ़ावा दिया और लोगों को अपना भोजन स्वयं उगाने और नवीकरणीय ऊर्जा स्रोतों का उपयोग करने के लिए प्रोत्साहित किया।

व्यवहारवाद (Pragmatism): अपने आदर्शवादी और प्रकृतिवादी विश्वासों के बावजूद, गांधी जी एक व्यवहारवादी भी थे जो परिवर्तन प्राप्त करने के लिए व्यावहारिक कदम उठाने में विश्वास करते थे। उनका मानना था कि व्यक्ति बदलाव ला सकते हैं और छोटे कार्यों से महत्वपूर्ण सामाजिक और राजनीतिक परिवर्तन हो सकते हैं।

उदाहरणः गांधी जी का अहिंसक प्रतिरोध का दर्शन सामाजिक और राजनीतिक परिवर्तन के लिए एक व्यावहारिक दृष्टिकोण था। उनका मानना था कि दमनकारी व्यवस्थाओं को चुनौती देने और बदलाव लाने के लिए अहिंसक विरोध एक शक्तिशाली उपकरण था। स्वतंत्रता के लिए भारत के संघर्ष में इस दृष्टिकोण का सफलतापूर्वक उपयोग किया गया था और दुनिया भर में कई सामाजिक न्याय आंदोलनों द्वारा अपनाया गया है।

कुल मिलाकर, (Idealism, Naturalism and Pragmatism): आदर्शवाद, प्रकृतिवाद और व्यावहारिकता का गांधी जी का दर्शन सामाजिक न्याय, पर्यावरणीय स्थिरता और व्यक्तिगत सशक्तिकरण के प्रति उनकी गहरी प्रतिबद्धता को दर्शाता है। उनके विचार दुनिया भर के लोगों को अधिक न्यायपूर्ण और न्यायसंगत समाज बनाने की दिशा में काम करने के लिए प्रेरित करते रहे हैं।

महात्मा गांधी जी एक प्रमुख भारतीय नेता थे जिन्होंने भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई थी। वह अपने अहिंसा, सामाजिक सुधार और शांतिपूर्ण विरोध के दर्शन के लिए जाने जाते थे। यहां उनके जीवन और विरासत पर कुछ नोट्स दिए गए हैं

प्रारंभिक जीवन और शिक्षा (Early life and education): गांधी जी का जन्म 2 अक्टूबर, 1869 को गुजरात के पोरबंदर में हुआ था। उन्होंने लंदन में कानून की पढ़ाई की और बैरिस्टर बन गए। हालाँकि, बाद में उन्होंने सामाजिक और राजनीतिक सुधारक बनने के लिए अपने कानूनी करियर को छोड़ दिया।

सामाजिक-राजनीतिक सुधारक (Socio&political reformer): गांधी जी भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन में एक अग्रणी व्यक्ति बने और सामाजिक न्याय, सांप्रदायिक सद्भाव और उत्पीड़ितों के अधिकारों को बढ़ावा देने के लिए काम किया। उन्होंने जातिगत भेदभाव, गरीबी और अशिक्षा के उन्मूलन की वकालत की।

उदाहरणः सांप्रदायिक सद्भाव को बढ़ावा देने में गांधी जी के काम को भारत में हिंदुओं और मुसलमानों के बीच की खाई को पाटने के उनके प्रयासों में देखा जा सकता है। 1946 में कलकत्ता में हुए सांप्रदायिक दंगों के दौरान, गांधी जी ने दो समुदायों के बीच शांति और एकता को बढ़ावा देने के लिए भूख हड़ताल की।

शांति और अहिंसा के दूत (Apostle of peace and onviolence) गांधी जी अहिंसक प्रतिरोध और शांतिपूर्ण विरोध की शक्ति में विश्वास करते थे। उनका मानना था कि हिंसा केवल अधिक हिंसा को जन्म देती है और यह कि सच्चा परिवर्तन केवल अहिंसक साधनों से ही प्राप्त किया जा सकता है। उदाहरणः गांधी जी के सबसे प्रसिद्ध अभियानों में से एक 1930 का नमक मार्च था, जिसमें उन्होंने और उनके अनुयायियों ने नमक उत्पादन पर ब्रिटिश एकाधिकार के विरोध में अरब सागर तक मार्च किया। मार्च सविनय अवज्ञा का एक अहिंसक कार्य था और स्वतंत्रता के लिए भारत के संघर्ष की ओर ध्यान आकर्षित करने में मदद की।

सत्याग्रह और अन्य आंदोलन (Satyagraha and other movements) गांधी जी ने सत्याग्रह की अवधारणा

www.ignited.in

विकसित की, जिसका अर्थ है "सत्य बल।" (truth force) सत्याग्रह अहिंसक प्रतिरोध का एक रूप था जिसमें अन्यायपूर्ण कानूनों और प्रथाओं के लिए निष्क्रिय प्रतिरोध शामिल था। उदाहरणः सबसे महत्वपूर्ण सत्याग्रह आंदोलनों में से एक 1942 का भारत छोड़ो आंदोलन था, जिसमें अंग्रेजों को भारत छोड़ने का आह्वान किया गया था। आंदोलन को व्यापक सविनय अवज्ञा और अहिंसक विरोध द्वारा चिह्नित किया गया था।

मृत्यु और विरासत (Death and legacy) 30 जनवरी, 1948 को एक हिंदू राष्ट्रवादी द्वारा गांधी जी की हत्या कर दी गई, जो सांप्रदायिक सद्भाव पर उनके विचारों से असहमत थे। हालाँकि, उनकी विरासत बनी रही और उन्हें 20वीं शताब्दी के सबसे उत्कृष्ट नेताओं में से एक के रूप में याद किया जाता है।

कुल मिलाकर, गांधी जी का जीवन और विरासत अहिंसा, सामाजिक सुधार और शांतिपूर्ण विरोध की शक्ति का एक वसीयतनामा है। उनके विचार दुनिया भर के लोगों को अधिक न्यायपूर्ण और न्यायसंगत समाज की दिशा में काम करने के लिए प्रेरित करते रहे हैं।

शिक्षा के सिद्धांत

यहां महात्मा गांधी जी के शिक्षा के सिद्धांतों पर कुछ नोट्स दिए गए हैं, जिनमें इसके मूल सिद्धांत और विश्वास शामिल हैं

मातृभाषा में शिक्षा (Education in Mother Tongue): गांधी जी के अनुसार, शिक्षा बच्चे की मातृभाषा में दी जानी चाहिए ताकि वे खुद को बेहतर ढंग से अभिव्यक्त कर सकें और अवधारणाओं को अधिक आसानी से समझ सकें। उदाहरणः गांधी जी स्थानीय भाषाओं में शिक्षा प्रदान करने में विश्वास करते थे और शिक्षा के लिए हिंदी, गुजराती और तमिल को बढ़ावा दिया।

अंग्रेजी के लिए कोई स्थान नहीं (No place for English): गांधी जी का मानना था कि अंग्रेजी शिक्षा छात्रों को उनकी अपनी संस्कृति और अपने लोगों से अलग कर देती है। इसलिए, वह अंग्रेजी शिक्षा के प्रचार के खिलाफ थे। उदाहरणः स्थानीय भाषाओं के उपयोग को बढ़ावा देने के लिए, गांधी जी ने भारत में अंग्रेजी माध्यम के स्कूलों की स्थापना का विरोध किया।

साक्षरता शिक्षा नहीं हो सकती (Literacy cannot be education): गांधी जी का मानना था कि केवल साक्षरता को ही शिक्षा नहीं माना जा सकता और शिक्षा को बच्चे के समग्र व्यक्तित्व के विकास पर ध्यान देना चाहिए। उदाहरणः गांधी जी के अनुसार, साक्षरता एक व्यक्ति के लिए समाज में अपने स्वयं के कर्तव्यों और अधिकारों को समझने के लिए पर्याप्त नहीं थी।

उद्योग के माध्यम से शिक्षा (Education through the industry): गांधी जी का मानना था कि शिक्षा उद्योगों के माध्यम से प्रदान की जानी चाहिए ताकि छात्र जीवन कौशल और व्यावसायिक प्रशिक्षण सीख सकें। उदाहरणः चरखा या चरखा, न केवल भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन का प्रतीक था, बल्कि व्यावसायिक शिक्षा और आत्मनिर्भरता के महत्व पर गांधी जी के जोर का भी प्रतिनिधित्व करता था।

स्वावलंबी शिक्षा (Self&supporting education): गांधी जी का मानना था कि शिक्षा स्वावलंबी होनी चाहिए न कि बाहरी धन पर निर्भर, ताकि यह किसी भी बाहरी प्रभाव से मुक्त रह सके।

उदाहरणः गांधी जी ने साबरमती आश्रम और सेवाग्राम जैसे आश्रम और संस्थान स्थापित किए, जो अपने स्वयं के संसाधनों के मामले में आत्मनिर्भर थे।

आजीविका के लिए आत्मनिर्भरता (Self&reliance for livelihood): गांधी जी का मानना था कि शिक्षा को लोगों को आत्मनिर्भर होना सिखाना चाहिए, और उन्हें ऐसे कौशल प्रदान करने चाहिए जो उन्हें आजीविका कमाने में सक्षम बनाएं।

उदाहरणः गांधी जी ने स्व-रोजगार और आत्मनिर्भरता के साधन के रूप में खादी (हाथ से काता सूती कपड़ा) के प्रचार को प्रोत्साहित किया।

शिक्षा को मानवीय मूल्यों का विकास करना चाहिए (Education should develop human values): गांधी जी का मानना था कि शिक्षा को ईमानदारी, अहिंसा, करुणा और विविधता के प्रति सम्मान जैसे मानवीय मूल्यों के विकास पर ध्यान देना चाहिए।

कुल मिलाकर, गांधी जी के शिक्षा के सिद्धांतों की विशेषता मातृभाषा में शिक्षा, आत्मनिर्भरता, व्यावसायिक प्रशिक्षण और मानवीय मूल्यों के विकास पर ध्यान केंद्रित करना था। ये सिद्धांत दुनिया भर के शिक्षकों के लिए प्रासंगिक और प्रेरक बने हुए हैं।

www.ignited.in

निष्कर्ष

महात्मा गांधी के राजनितिक गतिविधियों में कृषि और किसानों के मुद्दों के प्रति उनकी संवेदनाओं और प्रयासों का अध्ययन करते समय, हम पाते हैं कि वे आपातकालीन परिस्थितियों में भारतीय किसानों की दुखद स्थिति को गहराई से समझने की कोशिश करते थे। उनकी अद्वितीय दृष्टिकोण और संघर्ष तंत्र के माध्यम से वे किसानों के अधिकारों की रक्षा करने का प्रयास करते थे, जो किसान समुदाय की समाज में स्थान और सम्मान को मजबूत करने के लिए महत्वपूर्ण थे।

गांधीजी की महत्वपूर्ण सोच यह थी कि भारतीय स्वतंत्रता संग्राम को सिर्फ राजनीतिक आंदोलन के रूप में नहीं देखा जा सकता बल्कि यह एक सामाजिक आंदोलन भी था, जिसमें अन्नदाता किसान भी अपनी भूमि, आत्म-सम्मान और अधिकारों के लिए संघर्ष कर रहे थे। उनका प्रतिबद्धन गरीब किसानों की मदद करने, उनके आर्थिक स्थिति को सुधारने और उन्हें समाज में एक समान और अधिकारी नागरिक के रूप में स्थान देने की दिशा में था।

हालांकि गांधीजी के प्रयासों का व्यापारिक और राजनीतिक प्रयोजनों के साथ असमंजस था, उनकी योजनाएँ किसानों के लिए उचित मूल्य और उनकी समृद्धि की दिशा में महत्वपूर्ण थीं। आज भी, हमें उनके दृष्टिकोण से सिखने और उनके सिद्धांतों को समृद्धि और समाज में न्याय की दिशा में अपनाने की आवश्यकता है, ताकि हम किसानों को समर्थन और सम्मान प्रदान कर सकें और उनकी स्थिति को सुधारने के लिए संविदानिक, आर्थिक और सामाजिक उपायों को ध्यान में रख सकें।

इस अध्ययन से हम गांधीजी की दृष्टिकोण और किसानों के प्रति उनके प्रयासों के प्रति नया प्रकार से सोच सकते हैं और उनके संघर्षों और संविदानिक मूल्यों की महत्वपूर्णता को समझ सकते हैं। गांधीजी की चिंतन और संघर्ष भरी यात्रा के परिणामस्वरूप आज हमारे देश के किसानों को सहायता प्रदान करने और उनके आर्थिक और सामाजिक विकास को समर्थन देने का माध्यम बन सकते हैं।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. अग्रवाल, पीक., एवं षिप्रा, गांधी विचार और हम, प्रतिभा प्रतिष्ठान, नई दिल्ली, 2010 4. भट्ट, महेन्द्र, ग्राम स्वराज के नये अंकुर, सर्व सेवा संघ प्रकाशन, वाराणसी, 1999
2. भट्टाचार्य, प्रभात कुमार गांधी दर्षन, कालेज बुक डिपो, जयपुर, 1973
3. भट्टाचार्य, सब्यसाची आधुनिक भारत का आर्थिक इतिहास)1850-1947), राजकमल प्रकाषन, नई दिल्ली, 1987
4. चांदीवाला, ब्रजकृष्ण, गांधी जी की दिल्ली डायरी, खण्ड-2, गांधी स्मारक निधि एवं ज्ञानदीप का संयुक्त प्रकाशन, 1969,
5. चांदीवाला, ब्रजकृष्ण, मेरे बापू, गांधी पुस्तक घर, राजघाट कालोनी, नई दिल्ली, 1977
6. चतुर्वेदी, एमगांधी ., नेहरू, टैगोर, और अम्बेडकर, (राजनैतिक, आर्थिक और धार्मिक विचार(, वोहरा पब्लिशर्स एण्ड डिस्ट्रीब्युटर्स, इलाहाबाद,2004
7. चैहान, देवी सिंह, नये भारत के शिल्पी, प्रगति प्रकाशन, चैबे कालोनी, रायपुर (प्र.म), 1989
8. गुप्त (.सं), षिव कुमार, आधुनिक भारत का सामाजिक तथा आर्थिक इतिहास, पंचषील प्रकाषन, जयपुर, 1999
9. गुप्त, विष्व प्रकाष महात्मा गांधी (इत्यादि) व्यक्ति और विचार, राधा पब्लिकेषन्स, 1996.
10. जौली, सुरजीत कौर, गांधी एक अध्ययन, कन्सैप्ट पब्लिषिंग कंपनी, नई दिल्ली, 2007
11. हरीष कुमार, गांधी सामाजिक, राजनैतिक परिवर्तन, अर्जुन पब्लिषिंग हाऊस, नई दिल्ली, 2006,
12. झा, राजेश कुमार, गांधीय चिंतन में सर्वोदय, पोइंटर पब्लिशर्स, जयपुर (राजस्थान), 1995
13. कक्कड़, सुधीर, मीरा और महात्मा, (अनु-. (अषोक कुमार, राजकमल प्रकाषन, नई दिल्ली, 2005
14. कौषिक, आषा, गांधी नयी सदी के लिए, रावत पब्लिकेषन्स, जयपुर, दिल्ली, 2000.
15. कृपलानी, कृष्णा, गांधीःएक जीवन, (अनुभारत -. (भूषण, ओरिएंट लागमन लिमिटेड, नई दिल्ली

Corresponding Author

Geeta*

Research Scholar, Madhyanchal Professional University, Bhopal

www.ignited.in